परिशिष्ट-8 लोक अनुष्ठानों में वृक्ष-वनस्पति

१. वृक्ष-पूजा : देवतत्त्व

वृक्ष	देवता	वृक्ष-पूजा : हेतु	तिथि
अंडी	प्रह्लाद, होलिका ढुँढा (राक्षस देवी)	मंगल-कामना	फाल्गुन
अर्जुन	यक्ष नल और कबूर		
अशोक	कामदेव (अशोक की गणना कामदेव के बाणों में भी है।)	संतान-कामना	चैत्र शु. अष्टमी
ऑवला	ब्रह्मा देवगण गौरी के अंश से उत्पन्न	सौभाग्यकामना कुमारियों द्वारा पूजित	अक्षयनवमी
आक	सूर्य	मंगल-कामना स्वास्थ्य	श्रावणु शु. छट अकौआ छट
आम	कामदेव द्वापरवृक्ष कामदेव के बाणों में गणना		
इंदीवर	काम के बार्णो में		
(नीलकमल)	गणना		
ईख	कामदेव एवं त्रिपुरसुंदरी पर ईक का धनुष। ईख को मन का प्रतीक माना गया है।		
कमल	कामदेव का बाण लक्ष्मी-सरस्वती ब्रह्मा एवं लक्ष्मी का आयुध, राधा के हाथ में लीला कमल		
कदंब	श्रीकृष्ण लोहितायन (कार्तिकेय की धाय) भगवती का कदंब वन		

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पहला संस्करणः १९९७

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

कल्हार (लाल कमल)	कामदेव का बाण		
कुमुद	विकल्प में कामदेव के बाणों में उल्लिखित		
कुश	परम पवित्र गरुड़ ने कुशों पर अमृत रखा था		
केतकी	झूठी गवाही : शिव पर फल न चढ़ने का शाप		
केला	बृहस्पति	बृहस्पतिवार सौभाग्यकामना	
केरव (रक्त)	कामदेव के बाण		
गूलर	नृसिंह के नखों की ज्वाला शांत करनेवाला विष्णु वृक्ष, सैयद		
तिल	ब्रह्मा के पसीने से उत्पन्न		
तुलसी	अमृत बिंदु से उत्पन्न हरिप्रिया	मंगल-कामना	देवठान : विवाह पूजा : नित्यप्रति
दमनक	कामदेव शिवनेत्र की भैरव नामक की अग्निका नामक दमनक था, वही पार्वती के वरदान से पौधा बनी।	संतान-प्रेम, सौभाग्य-कामना	
दूब	भगवान के केशों से उत्पन्न	सुख-संपत्ति की कामना से पूजा	
नीम	देवी तथा विष्णु भैरव का निवास	सुख-संपत्ति की कामना से जल चढ़ाना।	
पलाश	पलाश	काकबलि ढाक के पत्ते पर दी जाती है।	
पाकर (प्लक्ष)	ब्रह्मा त्रेतायुग पाकर की जड़ से सरस्वती का प्राकट्य (पुराणों में प्लक्षद्वीप प्रसिद्ध)		
पीपल	वासुदेव विष्णु, नारायण लक्ष्मी, शनिवार सतयुग भगवती तथा शिव	अनिष्ट निवारण पुत्र-कामना	शनिवार अमावस

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पहला संस्करणः १९९७

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

	नर-नारायण पितृश्वर भूत-प्रेत शनि देवता दरिद्रा नाग देवता		
बहेड़ा	कलियुग		
बाँस	धुंधकारी प्रेत		
विल्व	लक्ष्मी और शंकर का प्रिय वृक्ष		
बेर	भूत प्रेत बद्रिकावन		
मालती	स्वरा के अंश से उत्पन्न		
महुआ	हरदौल लोक देवता एवं प्रेत का निवास		
रुद्राक्ष	शिव		
वट	बालमुकुंद विष्णुवृक्ष शिव कलि भूत-प्रेत मृत्यु वंशीवट तथा अक्षयवट : अभिप्राय	सौभाग्य-कामना	बड़मावस
शमी (छोंकर)	बब्रावाहन नर-नारयण		दशहरा (अश्विन)
शाल्मलि	ब्रह्मा ने छाया में विश्राम किया		
सूरजमुखी	मानवों के कल्याण हेतु स्वर्ग		

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पहला संस्करणः १९९७

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

	से आग चुरा कर धरती पर लान वाली सूरज की बेटी		

२. आनुष्ठानिक : वनस्पति

अशोक (पंचपल्लव)	तुलसा
आक (झाड़ा, समिधा)	दूब
आम	धतूरा
उड़द	नारियल
ओंधा (झाड़ा)	नीबू
कनेर	नीम
कमल	पीपल (पंचपल्लव)
कीकर	बड़ (वट : पंचपल्लव)
कुश बिनौला	बिनौला
केला	बेल
गुलाब	भंग
गूलर	मालती
चंदन	मिर्चे
चना (दाल)	रक्तचंदन
चावल (अक्षत)	लौंग
जामुन (पंचपल्लव)	शिरीष
झारा (नीम, शिरीष, आक, ओंधा मोरपंख)	सुपाड़ी
ढाक (समिधा)	हल्दी
तिल	

३. लोकजीवन का देवभाव

लोकमानस का कृतज्ञभाव देवपूजा के रूप में अभिव्यक्त होता है। लोकमानस ने देखा है कि उसके जीवन का आधार शस्यसंपदा, धरती मैया, गंगा मैया, जमना मैया, मेगों के देवता इंद्र, मेघों की देवी मेघासिन, जल देवता, वायुदेवता, सूर्य और चन्द्रमा देवता, गौ के जाये बैल। गौरापार्वती और सीता माता की कृपा से उत्पन्न होती है। जब खेत बोया जाता है तब एक गीत इस प्रकार गाया जाता है-

हर्यौ भयौ खेत जा भगत धना कौ
बीज बाँटि सब संतनु खायौ
रीति नाई जाकौ खेत जमायौ
एसौ बीज लहर लै उपजौ
जौ गेहूँ और मटर चना कौ
हरु सी नरई कुश सी बालि
गेहूँ रह्यौ गिरी सौ हालि

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पहला संस्करणः १९९७

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

घर भर के आँगन भर्यौ
हर्यौ भयौ खेत जा भगत धना कौ
धरती माता न हर्यौ करौ
लक्ष्मण से जती ने हर्यौ करौ
चामुंडा मैया ने हर्यौ करौ
भोले बाबा ने हर्यौ करौ
लाल लँगौटा सोटा बारे ने हर्यौ करौ
गौरा पार्वती ने हर्यौ करौ
भैन मांजी के भाग तें हर्यौ
भीख भिखारी के भाग तें हर्यौ
राँड-रकाली के भाग तें हर्यौ
हरौ भयौ खेत जा भगत धना कौ
धना भगत और मीरा बाई
जिनकी पच्छ करें रघुराई

गीत किसान की देवभावना को व्यक्त करता है। सूर्य, चंद्र, नक्षत्र, इंद्र, वायु, गंगा, यमुना, कुआँ, ताल, कुंड, जल, धरती, अग्नि, गोवर्धन पर्वत आदि प्राकृतिक शक्ति लोकमानस के लिए देवता है तथा अलौकिक चमत्कारपूर्ण शक्ति से अभिमंडित है। जल जीवन भी है और जल प्रलय है। अग्नि जीवन की शक्ति भी है और अग्नि सबकुछ को भस्म भी कर सकती है। वायु में प्राण भी है और वायु में झंझावात भी है। काल में ही रचना होती है और संहार भी काल में ही होता है। इन दिव्यशक्तियों के प्रति लोकमानस नतमस्तक है तथा उनको प्रसन्न करने के लिए कथावार्ता, व्रत, उपवास, त्यौहार तथा अनुष्ठानों का विकास करता है। उसके प्रायः सभी अनुष्ठान दो प्रकार के विधि-विधानों के साथ संपन्न होते हैं। एक विधिविधान का आचार्य उनकु पुरोहित है, जो देवताओं की प्रसन्नता के लिए मन्त्रोच्चारण करता है-

अग्नि देवता, वातोदेवता, सूर्योदेवता, चंद्रमा देवता, वसवो देवता, रुद्रा देवतादित्या देवता, मरुतोदेवता, विश्वेदेवा देवता, बृहस्पतिदेवतेंद्रो देवता, वरुणो देवता।

और दूसरे विधि-विधान की आचार्या बड़ी-बूढ़ी स्त्रियाँ हैं, जो गीत गाकर और कथा सुनाकर देवताओं को प्रसन्न करती हैं।

हवन और यज्ञ अग्निपूजा का स्वरूप है। स्त्रियाँ भोजन बनाने के बाद भोजन का अंश अग्निमुख स्वाहा कर-कर अग्नि में डाल देती हैं तथा कुछ अंश गैया की रोटी के रूप में निकाला जाता है।

४. भोजपुरी-देवीगीतों में : वृक्ष वनस्पति

निमियाँ की डरिया मइया नावेलीं हिडोलवा क झूलि झूलि ना।
मइया गावैंली गीतिया कि झूलि झूलि ना।
झुलत-झुलत मइया के लागलि पियसिया कि चलि हो भइलीं ना।
ओ ही मलिनी के घरवाँ मइया चलि हो मइली ना।
सूतर बाटूँ कि जागत मलिनिया कि बुन्न एक ना।
हमके पनियाँ पिआवा मालिन बून एक ना।

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पहला संस्करणः १९९७

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

धियवा त बाढ़े मालिन अपने ससुरवाँ पतोहिया तोहरी ना।
बाढ़े अपने नइहरबाँ पतहिय तोहरी ना?
कवन फलवा फूलेला साँझिया सबेरवाँ कि कवन फुलवा ना।
फूलै ठीक अधिरतिया कवन फुलवा ना।
चम्पा फुलवा फूलैला सँझियाँ सबेरवाँ कि बेइल फुलवा ना।
फूलै ठीक अधिरतिया कि बेइल फुलवा ना।
कवन फुलवा ओढ़न कवन फुलवा डासन अढ़हुलवा फुलवा ना।
मइया धरै सिरहवाँ कवन फुलवा ना।
चंपा फुलवा ओढ़न बेइलिया फुलवा डासन अढ़हुलवा फुलवा ना।
मइया धरैं सिरहनवाँ अढ़हुलवा फुलवा ना।
कवन तिरिया सूतै कवन तिरिया जागै कि कवन तिरिया ना।

- भारती : वीरेंद्रकुमार जैन, बंबई, अक्तूबर १९९६

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पहला संस्करणः १९९७

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.